1937C Unusual Treatment

Alaukik Chikitsa (Jain Gazettte, 1937)

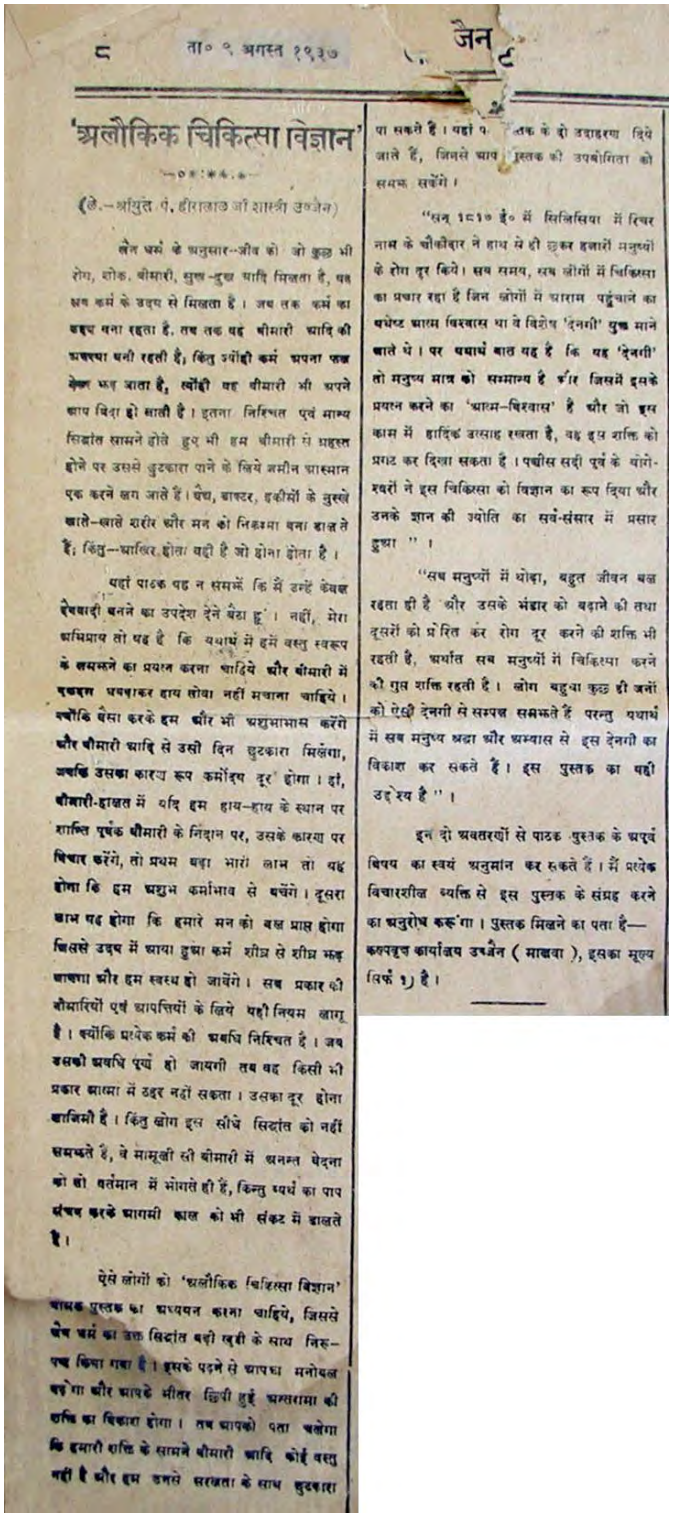

८ ता० ९ अगस्त १९३७ जैन ८

'अलौकिक चिकित्सा विज्ञान'

(ले.—श्रीयुत पं. हीरालाल जी शास्त्री उज्जैन)

जैन धर्म के अनुसार—जीव को जो कुछ भी रोग, शोक, बीमारी, सुख-दुख आदि मिलता है, वह अब कर्म के उदय से मिलता है। जब तक कर्म का बंधन बना रहता है, तब तक यह बीमारी आदि की अवस्था बनी रहती है, किंतु ज्योंही कर्म अपना फल देकर झड़ जाता है, त्योंही यह बीमारी भी अपने आप विदा हो जाती है। इतना निश्चित एवं मान्य सिद्धांत सामने होते हुए भी हम बीमारी से ग्रसित होने पर उससे छुटकारा पाने के लिये जमीन आस्मान एक करने लग जाते हैं। वैद्य, डाक्टर, हकीमों के नुस्खे खाते-खाते शरीर और मन को निकम्मा बना डालते हैं; किंतु—आखिर होता वही है जो होना होता है।

यहां पाठक यह न समझें कि मैं उन्हें केवल देववादी बनने का उपदेश देने बैठा हूं। नहीं, मेरा अभिप्राय तो यह है कि यथार्थ में हमें वस्तु स्वरूप के समझने का प्रयत्न करना चाहिये और बीमारी में एकदम घबड़ाकर दाय तोबा नहीं मचाना चाहिये। क्योंकि वैसा करके हम और भी अशुभाभास करेंगे और बीमारी आदि से उसी दिन छुटकारा मिलेगा, जबकि उसका कारण रूप कर्मोदय दूर होगा। हां, बीमारी-हालत में यदि हम हाय-हाय के स्थान पर शान्ति पूर्वक बीमारी के निदान पर, उसके कारण पर विचार करेंगे, तो प्रथम बड़ा भारी लाभ तो यह होगा कि हम अशुभ कर्मभाव से बचेंगे। दूसरा लाभ यह होगा कि हमारे मन को बल प्राप्त होगा जिससे उदय में आया हुआ कर्म शीघ्र से शीघ्र झड़ जायगा और हम स्वस्थ हो जावेंगे। सब प्रकार की बीमारियों एवं आपत्तियों के लिये यही नियम लागू है। क्योंकि प्रत्येक कर्म की अवधि निश्चित है। जब उसकी अवधि पूर्ण हो जायगी तब वह किसी भी प्रकार आत्मा में ठहर नहीं सकता। उसका दूर होना लाजिमी है। किंतु लोग इस सीधे सिद्धांत को नहीं समझते हैं, वे मामूली सी बीमारी में अनन्त वेदना को तो वर्तमान में भोगते ही हैं, किन्तु व्यर्थ का पाप संचय करके आगामी काल को भी संकट में डालते हैं।

ऐसे लोगों को 'अलौकिक चिकित्सा विज्ञान' नामक पुस्तक का अध्ययन करना चाहिये, जिससे जैन धर्म का उक्त सिद्धांत बड़ी खूबी के साथ निरूपण किया गया है। इसके पढ़ने से आपका मनोबल बढ़ेगा और आपके भीतर छिपी हुई अन्तरात्मा की शक्ति का विकास होगा। तब आपको पता चलेगा कि हमारी शक्ति के सामने बीमारी आदि कोई वस्तु नहीं है और हम उनसे सरलता के साथ छुटकारा पा सकते हैं। यहां पर पुस्तक के दो उदाहरण दिये जाते हैं, जिनसे आप पुस्तक की उपयोगिता को समझ सकेंगे।

"सन् १८१७ ई० में सिलिसिया में रिचर नाम के चौकीदार ने हाथ से ही छूकर हजारों मनुष्यों के रोग दूर किये। सब समय, सब लोगों में चिकित्सा का प्रचार रहा है जिन लोगों में आराम पहुंचाने का यथेष्ट आत्म विश्वास था वे विशेष 'दैनगी' युक्त माने जाते थे। पर यथार्थ बात यह है कि यह 'दैनगी' तो मनुष्य मात्र को सम्मान्य है और जिसमें इसके प्रयत्न करने का 'आत्म-विश्वास' है और जो इस काम में हार्दिक उत्साह रखता है, वह इस शक्ति को प्रगट कर दिखा सकता है। पचीस सदी पूर्व के योगेश्वरों ने इस चिकित्सा को विज्ञान का रूप दिया और उनके ज्ञान की ज्योति का सर्व-संसार में प्रसार हुआ"।

"सब मनुष्यों में थोड़ा, बहुत जीवन बल रहता ही है और उसके भंडार को बढ़ाने की तथा दूसरों को प्रेरित कर रोग दूर करने की शक्ति भी रहती है, अर्थात सब मनुष्यों में चिकित्सा करने की गुप्त शक्ति रहती है। लोग बहुधा कुछ ही जनों को ऐसी दैनगी से सम्पन्न समझते हैं परन्तु यथार्थ में सब मनुष्य श्रद्धा और अभ्यास से इस दैनगी का विकाश कर सकते हैं। इस पुस्तक का यही उद्देश्य है"।

इन दो अवतरणों से पाठक पुस्तक के अपूर्व विषय का स्वयं अनुमान कर सकते हैं। मैं प्रत्येक विचारशील व्यक्ति से इस पुस्तक के संग्रह करने का अनुरोध करूंगा। पुस्तक मिलने का पता है—कल्पवृक्ष कार्यालय उज्जैन (मालवा), इसका मूल्य सिर्फ १) है।